समकालीन हिंदी कविता में राजनीतिक–सामाजिक चेतना

डॉ. लालचंद सिन्हा

सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय नवीन महाविद्यालय,ठेलकाडीह
जिला– खैरागढ़–छुईखदान–गंडई (छ.ग.)

प्रस्तावना –

प्रत्येक कालावधि में प्रणीत साहित्य तद्युगीन समाज–परिवेश से अनुस्युत रहता है। समकालीन कविता भी परे नहीं रही है। समकाल में घटित घटनाओं का जो प्रभाव सामाजिक जीवन पड़ा, वह सब सापेक्ष रूप से समकालीन कविताओं अंकित होता रहा है। ज्ञान–विज्ञान की प्रगति के साथ–साथ मानव जीवन में भौतिक सुखों में उसी क्रम में वृद्धि हुई है। इससे मानव जीवन में विविधता आई है। आज का मानव समाज भेदों के कई स्तरों में विभक्त है। इसके लिए विभिन्न वैचारिक स्थितियॉ, आदर्श, परंपराऍ, अंतरविरोधों, मान्यताओं, धर्म, भाषा, राजनीति, और स्व वर्गहित आदि प्रमुख कारणों में से हैं। सच बात तो यह है कि आज के मानव जीवन की जटिलताओं और संघर्षमयता के मूल में झांकने का प्रयास करें तो इन सबके लिए आर्थिक क्षेत्र उत्तरदायी है। विश्व में बढ़ते औद्योगीकरण भौतिकतावादी वृत्ति के कारण मानवीय इच्छाऍ दमित होने लगी है। कुंठा, निराशा, संत्रास और पलायनवादी वृत्ति जिसकी उपज है। आज का मानव दूसरों से अत्यधिक सशंकित तो है ही, आत्मविश्वास भी खोने लगा है। मनुष्य सारे मूल्यों का स्रोत और उपादान है, साथ ही वह स्वयं ही उनके विघटन का भी कारण है। जो मूल्य सहस्त्रों वर्ष पूर्व निर्मित हुए थे सर्वतः विघटित होते जा रहे हैं। वैज्ञानिक प्रविधियों के विकास के परिणाम स्वरूप संसार की सीमाऍ संकुचित हुई है। मनुष्य के गतिशील संपर्को ने समाज में मूल्यहीन को जन्म दिया है। आज का मनुष्य स्वयं एक–दूसरे का सबसे बड़ा खतरा बन चुका है। सारे मानवीय संबंध और प्रतिमान अस्थिर हो गया है जिसके कारण संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं। आपसी प्रेम में स्वार्थपरता की गंध आने लगी है। धर्म का मार्ग बहुत संकीर्ण होता जा रहा है।

समकालीन हिंदी कविताओं में उक्त सारी परिस्थितियॉ यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। हिंदी साहित्य में अज्ञेय द्वारा 1943 में संपादित 'तारसप्तक' को समकालीन कविता का प्रवेश द्वार माना गया है। समकालीन कविता के अग्रदूत **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** ने अपनी कविताओं में समकालीन कविता सामाजि युगबोध का धरातलीय चित्रण किया है। उन्होंने आज के बदलते परिवेश में मनुष्य की सामाजिक मूल्यहीनता चित्रण करते हुए ऐसे लोगो पर व्यंग्याघात करते हुए लिखा है– **सांप!/तुम सभ्य हो हुए नहीं/नगर में बसना भी, तुम्हें नहीं आया/एक बात पूछूँ /उत्तर दोगे/तब कैसे सीखा डसना ?/विष कहॉ पाया ?'** 1

अज्ञेय जी ने देश में फैली हुई गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा और तद्जन्य जनता की पीड़ा के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त किया है। एक ओर गरीब जनता अपने दैनिक जीवनापयोगी चीजों के लिए लाचार है, वहीं दूसरी ओर राजनेतागण देश की समृद्धि की थोथी योजना बनाने में मशगूल हैं। अज्ञेय जी ने अपनी 'बॉगर और खादर' कविता में इसका यथार्थ चित्रण किया है– **''बॉगर में राजा जी का बाग है/चारों ओर दीवार है/बीच बाग कुंऑ है/बहुत बहुत गहरा/...और उसका जल/मीठा,निर्मल,शीतल/पर इस पर रहता है पहरा/खादर में/... आगे खुली रेती पार/सदानीरा नदी है/ गॉवों के गॅवार उसी में नहाते हैं/...आचमन करते हैं /डॉगर भंसाते हैं/और जो मर जाये उनकी मिट्टी भी /वहीं होनी बदी है।** ''2

शिक्षा और संचार के विस्तार तथा औद्योगीकरण–शहरीकरण जनित पलायन के कारण अब प्रकृति की गोद में जीवन यापन करने वाले ग्रामीणों की जीवन शैली में शहरों का दूषित असामाजिक वातावरण विषैली वायु की भांति फैलती जा रही है। **'हमारा देश' कविता में यह दृष्टव्य है– ''इन्हीं ढोल मादक बॉसुरी के/उमगते सुर में/हमारी साधना का रस बरसता है/इन्हीं के मर्म को अनजान/शहरों की ढॅकी लोलुप विषैली/वासना का सॉप डसता है।**''3

समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में **श्री गजानन माधव मुक्तिबोध** का स्थान स्वर्णांकित है। वे सचेत,सतर्क और सोद्देश्य कवि हैं। व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंधों की वैज्ञानिक व्याख्या और उसकी काव्यमय

अभिव्यक्ति उनकी कविताओं का अंतर्मन है। सामाजिक यथार्थबोध चित्रण की दृष्टि से वे कबीर और निराला के साहित्यिक वंशधर हैं। उनकी कविताएँ शोषित, पीडित और गरीब निम्नवर्गीय लोगों का सच्चा हिमायती बनकर खड़ी है। मुक्तिबोध जी पूंजीवाद की शोषण वृत्ति में पीसते हुए शोषितों, श्रमिकों और निम्नमध्यवर्गीय परिवार की निराशा, कुण्ठा, संत्रास और जद्जनित जीवन संघर्षो को मुखरित करने में सफल रहे हैं। 'मै तुम लोगों से दूर हूँ ' कविता शोषित श्रमिक की जीवन व्यथा को इस तरह से अभिव्यक्त किया है–**''मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ/तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न है/कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए अन्न है।''**4 मुक्तिबोध जी वर्तमान में समाज में फैली विसंगतियो को दूर कर देना चाहता है। वे आर्थिक अव्यस्था को समाप्त करने के पक्षधर हैं।उन्हें एक ऐसे प्रतिनिधि की आवश्यकता है जो शोषितो–पीड़ितों में चेतना का स्वर फूंक सके– **''इसलिए कि जो है उससे बेहतर चाहिए/पूरी दुनिया साफ करने के लिए मेहतर चाहिए।''**5 उनके द्वारा प्रणीत **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'** कविता संग्रह की सर्वाधिक लंबी कविता 'अँधेरे में देश के आधुनिक जन इतिहास का स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात् का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज है। मुक्तिबोध जी ने समाज फैली कुव्यवस्था और उससे उत्पन्न दबाओं का यथार्थ चित्रण किया है। वे स्वयं अपने अंतर्मन में उत्पन्न होने वाली जनक्रांति की भावना को दबाने विवश है। यही भावना बार–बार कवि को कचोटते रहता है और समय पाकर प्रकट भी होता है–**'' वह रहस्यमय व्यक्ति/अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है/पूर्ण अवस्था वह/निज संभावनाओं,विहित प्रभावों, प्रतिभाओं की/ मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव/हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह/आत्मा की प्रतिमा।''**6 समकालीन भौतिकतावादी समाज में मानव मानवीय मूल्यों का भूलता जा रहा है और मानव के स्तर से गिरकर वस्तुपरक होते जा रहा है। वे 'अंधेरें में' कविता में आदर्श और सिद्धांत का चोला पहनकर स्वार्थ में लिप्त लोगों नग्न कर दिया –**'' प्रोसेसन/विचित्र प्रोसेसन/प्रतिष्ठित पत्रकार इसी नगर के/.... कर्नल, ब्रिगेडियर, जनरल, मार्शल/कई और सेनापति, सेनाध्यक्ष/.....कई प्रकाण्ड आलोचक, विचारक/जगमगाते कविगण/मंत्री भी,उद्योगपति और विद्वान/यहॉ तक कि शहर का हत्यारा कुख्यात डोमा जी उस्ताद/बनता है बलवन हाय हाय।''**7 आदर्श और सिद्धांत का चोला पहनकर स्वार्थ में अंधे व्यक्तियों पर कटु व्यंग्य करते हुए लिखते हैं –**''ओ मेरे आदर्शवादी मन/ओ मेरे सिद्धांतवादी मन/अब तक क्या किया?/जीवन क्या जिया?/उदरम्भरि बन अनात्म बन गये/भूतों की शादी में कनात से तन गये/किसी व्यभिचारी के बन गये बिस्तर/.....विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में।''**8

समकालीन काव्यधारा के प्रथम पंक्ति के रूप में **श्री भवानी प्रसाद मिश्र** का नाम आदर से लिया जाता है। श्री मिश्र जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी भावनाओं को पाठकों तक सहज और सरल शब्दों में संप्रेषित किया है, जिससे अधिक से अधिक जनचेतना जागृत हो सके। उन पर गांधी जी का व्यापक प्रभाव था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ऐसी कल्पना की गयी थी कि हमारे भारतवर्ष मे सभी व्यक्ति सुखी और समृद्ध होंगे, सभी शिक्षित होंगे। लेकिन इन आशाओं पर उस समय पानी फिर गया जब तथाकथित राजनेताओं में स्वार्थ भावना घर कर गई। परिणामतः यह देश शस्य–श्यामला संपन्न होते हुए भी इसकी जनता गरीबी,भुखमरी,अशिक्षा,अन्याय और भय तथा संत्रास से युक्त जीवन जीन के लिए विवश है। इन स्थितियों को अभिव्यक्ति मिश्र जी ने इस प्रकार से प्रदान की है–**''मैं असभ्य हूँ, क्योंकि खुले नंगे पॉव चलता हूँ/ मैं असभ्य हूँ, क्योंकि चीर धरती धान उगाता हूँ/ मैं असभ्य हूँ, क्योंकि कात कर स्वयं बनाता कपड़े/ मैं असभ्य हूँ, क्योंकि नहीं पैन मेरे जबड़े/आप सभ्य हैं,क्योंकि हवा में उड़ जाते हैं ऊपर/ आप सभ्य हैं,क्योंकि धान से भरी आपकी कोठी/ आप सभ्य हैं,क्योंकि आपके महज बने हैं/ आप सभ्य हैं,क्योंकि आपके जबड़े खून से सने हैं।''**9 लोगों में मानवीय मूल्यों का ह्रास किस स्तर तक हो सकता है इसका विवरण मिश्र जी ने अपने **'गीत–फरोश'** नामक कविता में यथार्थ रूप से दिया है। लोगों ने सच्चाई और ईमान तक को स्वार्थपूर्ति के निमित्त बेच दिये हैं। कवि को ऐसे स्वार्थी समाज में अपने संवेदनात्म मनोभाव अर्थात् अपनी कविता को बेचना पड़े तो इसमें कोई असंगति नहीं है–**''जी,पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको/पर पीछे–पीछे अक्ल जगी मुझको/जी लोगों ने तो बेच दिये ईमान/जी, आप न हो सुनकर ज्यादा हैरान/मैं सोच–समझकर आखिर/अपने गीत बेचता हूँ।''**10

एक सच्चा जन कवि वही होता है, जिनके हृदय में विपरीत परिस्थियों में जी रहे साधारण जन के प्रति गहरा अनुराग होता है। इस दृष्टि से समकालीन काव्यधारा के कवि **बाबा नागार्जुन** पूर्णतः खरे उतरते हैं। वे संघर्षशील जनता के सच्चे प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने अपने देश की जनता की दशा को लेकर गहरी चिंता ,राजनैतिक स्तर पर उपेक्षा तथा बेहतर जीवन के संघर्ष को अपनी कविता में उभारा है। बाबा नागार्जुन सीधी–सादी कविता में अपनी बात को पूरी ताकत के साथ कहने में सामर्थ्य रखते हैं। उनकी कविता में युगबोध सापेक्ष सामाजिक स्थिति का खुला और साफ–साफ चित्रण है। बाबा नागार्जुन यायावर होने के साथ ही संघर्षशील व्यक्ति हैं। भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से

मुक्ति तो मिली लेकिन आत्मिक स्वतंत्रता नहीं मिल सकी। स्वतंत्रता के पश्चात् यहॉ की वायु मे पदलोलुपता और स्वार्थ की गंध आने लगी थी। उनकी पंक्तियॉ दृष्टव्य है– **''सामंतों ने कर दिया प्रजातंत्र का होम/लाश बेचने लग गये खादी पहने डोम/खादी पहने डोम लग गये लाश बेचने/माइक गरजे, लगे जादुई ताश बेचने/इन्द्रजाल की छतरी ओढ़े श्रीमन्तों ने/ प्रजातंत्र का होम कर दिया सामंतों ने।''**11 बाबा नागार्जुन ने प्रेमचंद जी को उन्होंने अपना अग्रज स्वीकार किया है। साधारण जनता ही उनकी कविता का ऊर्जा स्रोत है। उनका सारा जीवन शोषित साधारण जन के जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं को सबके समक्ष उजागर करने में बीता है। उनकी कालजयी कविता **'शासन की बंदूक'** मे शासन की क्रूरता पर करारा व्यंग्य है। देश में सर्वत्र कुशासन है जिसमें प्रख्यात गांधीवादी विनोबा जी की अहिंसा मूलक आवाज भी दब गई है–**''बढ़ी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक/धन्य,धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक/सत्य स्वयं घायल हुआ,गई अहिंसा चूक/जहॉ तहॉ दगने लगी, शासन की बंदूक।''**12 इतना होने पर भी बाबा नागार्जुन जी को जनता के आत्मबल, उत्साह और साहस बढ़ाते हुए लिखते हैं –**''जली ठूंठ पर बैठकर, गई कोकिला कूक/बाल न बॉका कर सकी, शासन की बंदूक।''**13 **अक्खड़–फक्कड़ और मस्तमौला** बाबा नागार्जुन जी बात को साफगोई से कर सकने की ताकत रखते हैं।जनता के सपनों और आस्थाओं पर पूर्णतः खरे उतर सके हैं।

समकालीन समाजवादी विचारधारा को प्रवाहित करने वाले समकीन कवियों में **श्री रघुवीर सहाय जी** एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी कविता की भावधारा समकालीन राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों को लेकर बही है। इसी कारण कुछ लोग उन्हें **राजनीतिक कविता' का सर्वप्रधान तर्क मानते हैं।** श्री सहाय जी की कविता का मूल स्वर छले गए और सत्ता तंत्र द्वारा प्रपीड़ित पस्त साधारण जन के प्रति गहरी संवेदना है। श्री सहाय जी की कविताओं में उनके पत्रकार जीवन की गहरी छाप पड़ी है। इसीलिये वे भोगे हुए यथार्थ की सही पहचान कर सकने में सफल हुए हैं। शासन तंत्र से प्रपीड़ित साधारण जन के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करने के लिए ऐसी भाषा चाहते हैं, जिसके दो अर्थ न हों। जो शोषित जनता की पीड़ा को शतशः व्यक्त कर सके– **''मैं सब जानता हूँ, पर बोलता नहीं/मेरा डर मेरा सच एक आश्चर्य है/पुलिस के दिमाग में वह रहस्य रहने दो/वे मेरे शब्दों की ताक में बैठे हैं/जहॉ सुना नहीं, उसका गलत अर्थ लिया,और मुझे मारा/इसलिए कहूँगा मैं, मगर मुझे पाने दो/पहले ऐसी बोली, जिसके दो अर्थ न हो।''**14 वर्तमान में मानवीय मूल्यों का दिन –प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। परिणामतः व्यक्ति का जीवन समाज में रहते हुए भी असुरक्षित हो गया है। सारा समाज इतना स्वार्थमय और कायर हो गया कि एक व्यक्ति को शोषण और अत्याचार से मरते देखकर ऑखें मूँद लेता है। समाज की इन्हीं विसंगतियों पर चूभते व्यंग्य प्रहार **'रामदास'** कविता में किया है–**''निकल गली से तब हत्यारा/आया उसने नाम पुकारा/हाथ तौलकर चाकू मारा/छूटा लोहू का फव्वारा/कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी/भीड़ ठेलकर लौट गया वह/मरा पड़ा है रामदास यह/देखो–देखो बार–बार कह/लोग निडर उस जगह खड़े रह/लगे बुलाने उन्हें, जिन्हें संशय था, हत्या होगी।''**15 श्री सहाय जी राजनैतिक संदर्भों को काव्य में निरूपित करने में सिद्धहस्त हैं। उन्होंने शासन की स्वेच्छाचारी शोषण वृत्ति का पर्दाफाश किया है। शासक वर्ग शोषित जनता को कष्ट में देखकर उसकी हॅसी उड़ाता है कि ये कितने लाचार है। वे यह सोचकर खुश होते हैं कि यह प्रजातंत्र के अंतिम क्षण है। **'आपकी हॅसी'** नामक कविता में निरंकुश शासक वर्ग पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं–**''निर्धन जनता का शोषण है/कहकर आप हॅसे/लोकतंत्र का अंतिम क्षण है/कहकर आप हॅसे/चारों ओर बड़ी लाचारी है/कहकर आप हॅसे/कितने आप सुरक्षित होंगे/मैं सोचने लगा/सहसा मुझे अकेला पाकर/ फिर से आप हॅसे।''**16 श्री रघुवीर सहाय जी की सारी निष्ठा मानवता के प्रति रही है।वे अपने समय और परिवेश के प्रति निरंतर जागरूक रहे हैं।

समकालीन कविता की यह सर्वप्रमुख विशेषता रही है कि उसमें सातवें–आठवें दशक का इतिहास अपने आप उभर आया है। समकालीन हिंदी कविता के समर्थ हस्ताक्षर और हिंदी गजल के प्रर्वतक **श्री दुष्यंत कुमार त्यागी** का नाम आदर से लिया जाता है। **'सूर्य का स्वागत', आवाजों के घेरे', 'एक कंठ विषपायी' और 'साये में धूप'** उनकी पहचान और प्रसिद्धि बनाने वाली रचनाऍ हैं। 'साये में धूप' हिंदी गजलों की संभावनाओं का द्वार है। **श्री दुष्यंत कुमार जी** अपने गजल संग्रह **'साये में धूप'** में अपने समाज, देश और परिस्थितियों के प्रति गहरे संवेदनशील है। गांधी जी ने स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् जिस समाज व देश का सपना देखे थे वे सारे के सारे सपने स्वार्थी पदलोलुप राजनेताओं ने बिखरा दिये– **''कहॉ तो तय था चिरागॉ हरेक घर के लिए/कहॉ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए/न हो कमीज तो पॉवों से पेट ढॅक लेंगे/ये लोग कितने मुनासिब हैं, इस सफर के लिए।''**17 कुछ इस प्रकार की बानगी और देखिए **–''कई फाके बिताकर मर गया, जो उसके बारे में/वो सब कहते हैं अब, ऐसा नहीं हुआ होगा/यहॉ तो सिर्फ गूँगे और बहरे**

लोग बसते हैं/खुदा जाने यहॉ पर किस तरह जलसा हुआ होगा।'' '' दुकानदार तो मेले मे लुट गए यारों/तमाशबीन दुकान लगा के बैठ गए/खड़े हुए थे अलावों की ऑच लेन को, सब अपनी– अपनी हथेली जलाके बैठ गए।''18

वास्तव में सातवे–आठवें दशक की कविताएँ सर्वाधिक विस्फोटक प्रभावशाली रही है। क्योंकि इसमें युग चेतना को अनुभव के साथ भोगने और जन जन तक उसे संप्रेषित करने में पूर्णतः सक्षम है। इसके पीछे मूल कारण यह है कि लंबे संघर्षोपरांत जो स्वतंत्रता मिली और इससे जो दिवा स्वप्न दिखाई गए थे, वह शीघ्र ही भंग हो गया। समकालीन कवि **श्री सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'** की कविता प्रहार और पर्दाफाश की कविता है। उनके काव्य में निहित युग सचेतक भावना को लक्षित करके कहा गया यह कथन पूर्णतः सत्य है कि **''धूमिल की कविता क्षत–विक्षत हिन्दुस्तान की तस्वीर है, वह लोकतंत्र की विफलता और राजनीतिक,सामाजिक तथा नैतिक स्तर पर आम आदमी के साथ किये गये विश्वासघात का दस्तावेज है।''** धूमिल जी दीन–हीन दलित और ग्रामीण जनों के सच्चे प्रतिनिधि हैं। वे अभावग्रस्त ग्राम्य–जीवन से जीवंत संपर्क में थे, जहॉ सिर्फ अशिक्षा,गरीबी,रोग और भय ही भय का आतंक है। 'बीस साल बाद' कविता में देश की जनता दयनीय दशा का चित्रण करते हुए लिखते हैं **–''बीस साल बाद/मैं अपने आप से एक सवाल करता हूँ/जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरूरत होती है/.....दोपहर हो चुकी है/ हर तरफ ताले लटक रहे हैं/दीवारों से चिपके गोली के छर्रों/और सड़क पर बिखरे जूतों की भाषा में/एक दुर्घटना लिखी गई है/हवा से फड़फड़ाते हुए हिन्दुस्तान के नक्शे पर/गाय ने गोबर कर दिया है।** ''19 धूमिल जी ने 'रोटी और संसद' कविता में ऐसे स्वार्थी नेताओं पर करारा व्यंग्य किया है जो देश की संसद में बैठकर गरीब जनता की रोटी से खेलते रहते हैं**–'' एक आदमी/रोटी बेलता है/एक आदमी रोटी खाता है/जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है/वह सिर्फ रोटी से खेलता है/मैं पूछता हूँ/यह तीसरा आदमी कौन है?/ मेरे देश की संसद मौन है।''**20 हमारे संविधान मे जन–गण को संप्रभुत्व मानते हुए सभी व्यक्तियों को सभी प्रकार के समता का मौलिक अधिकार दिया गया है।यह केवल संवैधानिक तथ्य बनकर रह गया है। आर्थिक स्तर पर बहुत ज्यादा असमानता दिखाई देने लगी है। गरीब व्यक्ति दिनों–दिन गरीबी और अभावों के दुश्चक्र में पीसता जा रहा है, दूसरी ओर पूंजीपति–धनिक वर्ग का आर्थिक क्षेत्रों पर एकाधिकार हो गया है। ऐसी स्थितियों पर **'अकाल दर्शन'** नामक कविता में प्रश्नाघात किया है**–''वह कौन–सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है/कि जिस उम्र में/मेरी मॉ का चेहरा/झुर्रियों का झोली बन गया है/उसी उम्र में मेरे पड़ोस की महिला के/चेहरे पर/मेरी प्रेमिका के चेहरे–सा /लोच है।''**21 भारत का अतीत स्वर्णिम रहा है। लेकिन वर्तमान में देश की हालत बहुत जर्जर हो चुकी है। देश प्रेम की भावना खोने लगी है तथा इस देश के कर्णधार राजनेतागण सत्ता प्राप्ति के लिए घृणित से घृणित हथकण्डे अपनाने लगे हैं। ऐसे राजनेताओं की स्वार्थी चरित्रका उद्घाटन करते हुए धूमिल जी लिखते हैं– **''लाल हरी झंण्डियॉ/जो कल तक शिखरों पर फहरा रही थी/वक्त की निचली सतहों में उतर कर स्याह हो गयी है और चरित्रहीनता/मंत्रियों की कुर्सी मे तब्दील हो चुकी है/मैंने भी इस देश को/ एक जवान आदमी की रंगीन इच्छाओं की गहराई से/ प्यार किया था/मगर अब अतीत में अपना चेहरा/देखने के लिए/शीशे की धूल झाड़ना बेकार है/उसकी पॉलिश उतर चुकी है।''**22

स्वातंत्र्योत्तर कालीन जनसंघर्ष की उपज समकालीन कविताओं के कवियों में **श्री गिरिजा कुमार माथुर** का नाम समादृत है। इनकी कविताओं में अहंवादी व्यक्तित्व से उपजने वाली सभी भावों– काम, कुण्ठा, और अलगाव तथा आतंक का यथार्थवादी चित्रण सहज रूप में मिलता है। समकालीन सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हुए माथुर जी **'दो पाटों की दुनिया'** नामक कविता में लिखते हैं**–''राहें सभी अन्धी है/ज्यादातर लोग पागल है/अपने ही नशे चूर/वहशी हैं या गाफिल है/खलनायक हीरो हैं/विवेकशील कायर है/थोड़े से ईमानदार/लगते सिर्फ मुजरिम है।''**23 **'दफ्तर' कविता में सत्ताधारी शोषक व्यवस्था का चित्रण किया है–'' यह कौन सी व्यवस्था है,नाटक के सारे पात्र जहॉ/खलनायक हैं, खुशामदी विदूषक,जिनके हर कुकर्म पर/तालियॉ बजाते हैं,जहॉ तिकड़ी लफंगे सत्ताधारी है/चूर हैं वातानुकूलित अय्याशी में सरे आम पूजते हैं/कामयाब बेईमान फटीचर मीडिलची रोके हैं कई रास्ते। ''** 24

समकालीन कवियों में **श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** जी स्वयं में अपने–आप ही एक अभिव्यक्ति हैं। सामाजिक विडंबनाओं के प्रति व्यंग्यशर संघात करने में वे कभी नहीं चूके। प्रजातंत्र इस देश में दिखावा मात्र रह गया है। जिस प्रकार से जूतों के काटने पर व्यक्ति उन्हें पहनने के स्थान पर लाठी मे लटका लेता है, ठीक वही स्थिति इस समय लोकतंत्र की है। इसी विफलता पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं–**''लोकतंत्र को जूते की तरह/लाठी में लटकाए/भागे जा रहे हैं सभी/सीना फुलाये।''**25 सक्सेना जी समाज में फैली विभिन्न विसंगतियों को दूर करने जनमानस में संचेतना भर देना चाहते हैं। विघटित सामाजिकता के दौर में लोग विवशता के बजाय कुतुहल को देखना पसंद करते है**–''अपने**

इस गटापारची बबुए के/पैरों में शहतीरे बॉध कर/चौराहे पर खड़ा कर दो/फिर चुपचाप ढोल बजाते जाओ/शायद पेट पल जाय/दुनिया विवशता नहीं कुतूहल खरीदती है।''26 प्रचलित विकलांग श्रद्धा, झूठी संवेदना और झूठी दया आदि सामाजिक मूल्यों की हार की पराकाष्ठा है। 'सौंदर्य–बोध' नामक कविता में सटीक व्यंग्य किया है– **आज की दुनिया में विवशता, भूख, मृत्यु/सब सजाने के बाद ही/पहचानी जा सकती है/बिना आकर्षण के दुकानें टूट जाती है/शायद कल उनकी समाधियॉ नहीं बनेंगी/जो मरने के पूर्व/कफन और फूलों का/प्रबंध नहीं कर लेंगे।**''27

जनमानस को विकासोन्मुख प्रगति पथ पर मार्गदर्शन करने वाले समकालीन कवियों में **श्री धर्मवीर भारती** जी का नाम आदर से लिया जाता है। भारती जी का दृष्टिकोण पूर्णतः मानवतावादी रहा है। पूंजी के असमान वितरण ने मनुष्य का स्तरीकरण किया है। ऐसी स्थिति में वे सामान्य से सामान्य मनुष्य को भी पर्याप्त महत्त्व देते हैं– **'' मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ/लेकिन मुझे फेंको मत/क्या जाने उकब/इस दुरूह चक्रव्यूह में/अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ /कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाये।**''28 श्री धर्मवीर भारती जी का समग्र काव्य चेतना समकालीन समाज में व्याप्त अंतर्विरोधों एवं असंगतियों का मूलोच्छेदन करते हुए जन–मानस की सोयी हुई आत्मा को जागृत करने का सार्थक प्रयास है।

समकालीन कवि **भारत भूषण अग्रवाल जी** तार सप्तक के प्रकाशन से पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया।अग्रवाल जी की कविताओं में प्रेम और प्रकृति के साथ साथ युगबोध की अभिव्यक्ति हुई है। उनका काव्य संग्रह' एक उठा हुआ हाथ' में राजनीति, प्रजातंत्र, समाजवाद, चुनाव, अर्थहीन जनतंत्र तथा जिंदगी तमाम विसंगतियों की ओर केंद्रित किया है–**''जनतंत्र की टंकी फट गई/और शब्दों का भयंकर रेला है/थर्राता हुआ सबको निगलने आ रहा है/किताबों की फुहारे/अखबारों की बौछार/भाषणों के परनाले,बहसों की नदियॉ।**''29

डॉ.रामविलास शर्मा जी यद्यपि मूल रूप मार्क्सवादी आलोचक हैं। यही कारण है कि उनकी कविताओं में मार्क्सवादी आलोचना के तत्त्व मौजूद है। वे प्रथम तार सप्तक के प्रयोगवादी कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति चित्रण के साथ सर्वहारा वर्ग के जीवन का यथार्थबोध भी है। वे शोषित जनता की पीड़ा को मुखरित किया है–**''कंकाल/हड्डियों के रक्तहीन,मांसहीन,कंकाल/.....परतंत्र देश के युवक हैं युवक हैं/कहॉ है जीवन,कहॉ है चिरंतन आत्मा?/हड्डियों का संघर्षपूर्ण जीवन है/हड्डियों में बसा हुआ ताप ही आत्मा है।**'' 30

आधुनिक युग के विरोधाभासों को तार सप्तक के समकालीन कवि श्री नेमीचंद जैन ने सशक्त अभिव्यक्ति दी है । आज बुद्धि और हृदय, ज्ञान तथा कर्म में परस्पर सहसंबंधी न होकर विरोधी हो गए हैं। वे आधुनिक युग को संघर्षो का युग और संक्राति काल मानते हैं। वे संक्रातिकाल की परंपरागत मान्यताओं का विश्लेषण इस प्रकार से करते हैं –**''कवि सृष्टा है/वह क्यों गाए इस वर्तमान के, अति कुत्सित वीभत्स/अंधेरे के,जड़ता के/काले काले वृद्ध गीत/जब देख रह, उसके अधमुँहे नयन/क्षितिज के पार दूर/गरिमा के गौरव से मण्डित स्वर्णिम अतीत।**''31

कवियों के कवि श्री शमशेर बहादुर सिंह का काव्य वैविध्यपूर्ण हैं। वे कला के संघर्ष को समाज के संघर्ष के जोड़कर देखते हैं। वे प्रतिनिधि प्रगतिशील प्रयोगवादी कवि हैं। वे मार्क्सवाद की वैचारिकी से आधार ग्रहण कर सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं– **''गाओ!/वह मजदूर किसानों के स्वर कठिन हठी/कवि हे, उनमें अपना हृदय मिलाओ/उनके मिट्टी के तन में,है अधिक आग/है अधिक ताप/उसमें कवि हे/अपने विरह–मिलन के पाप जलाओ/काट बुर्जुआ भावों की गुमठी को गाओ।**''32

साठोत्तरी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर श्री गोरख पाण्डेय जी ने आजादी के बाद की स्थिति के लिए भ्रष्ट राजनेताओं को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्हें कटघरे मे खड़ा करते है। भ्रष्ट राजनेता और पूंजीपति सर्वहारा वर्ग के मन को भयाक्रांत कर शोषण करता रहता है। किंतुभय को साधन मानने वाले इन शोषणकर्ताओं को भी अलग तरह का भय है, कहीं ये सर्वहारा वर्ग संगठित होकर उनसे डरना बंद न कर दे–''**तमाम धन दौलत,गोला बारूद,पुलिस फौज के बावजूद/वे डरते हैं कि एक दिन निहत्थे और गरीब लोग/उनसे डरना बंद कर देंगे।**''33 इसी प्रकार **कैलास बाजपेयी** ने 'खुशहाल सपने 'कविता में झूठे आश्वासन और झूठे नारों वाले भ्रष्ट नेताओं व्यंग्य किया है–**'झूठे नारों और खुशहाल सपनों से लदी/बैलगाड़ियॉ वर्षों से जनपथ पर आ जा रही है।**''34

आजादी के बाद भ्रष्ट पदलोलुप नेताओं के पूंजीपतियों के साथ सांठ गॉठ और उनके झूठे आश्वासन और झूठे नारों से गरीब जनता का मोहभंग हो गया। समकालीन कविता में आजादी से मोहभंग की काव्यमय व्यथा कथा है। आजादी के बाद गांधी जी की सत्य ,अहिंसा, सर्वधर्म सब कुछ प्राय लुप्त सा हो गया। गांधीवाद का मुखौटा पहने भ्रष्ट राजनेताओं पर व्यग्य करते हुए विष्णुचंद्र शर्मा ने अपनी कविता 'आयात निर्यात' मे इसी ओर संकेत किया है– **''हमारी**

स्वाधीनता के वीर सिपाही/शराब औ गांजे के परमिट बेच रहे हैं/हैदराबाद के म्युजियम मे एक घड़ी है/जिसमें से गांधी हर घण्टे...आते और लौट जाते/स्वामी दयानंद का सत्यार्थ प्रकाश और तिलक का गीता रहस्य/बनियों ने खरीद लिया है।"35

उपसंहार

सचमुच साहित्य और समाज मे घनिष्ठ संबंध होता है। किसी सी साहित्य से उसके समाज का और किसी भी समाज से उसके साहित्य की प्रकृति को समझा जा सकता है। एक सच्चा साहित्यकार युगबोध का कुशल समीक्षक होता है। उसमें अपने समकालीन समाज में प्रचलित रूढ़ियों तथा व्याप्त विसंगतियों से विग्रह लेने की क्षमता होती है। इस परिप्रेक्ष्य मे यदि हम समकालीन काव्य साहित्य का अनुशीलन करते हैं तो इसमे व्यापक युगबोध का चित्रण मिलता है। दीर्घ अवधि के संघर्षोपरांत मिली स्वाधीनता की पृष्ठभूमि में स्वच्छ और सुखद समाज की परिकल्ना की गई थी, लेकिन वह परिकल्पना साकार न हो सकी। भारतीय जन–मानस ब्रिटिश साम्राज्य के शोषण चक्र से किसी तरह निकल कर पदलोलुप,स्वार्थी राजनेताओं और पूंजीपतियों के शोषण चक्र में फॅस गया। समाज मे गरीबी,अशिक्षा,बेरोजगारी, भय, कुण्ठा, जीवन के वितृष्णा,अकर्मण्यता और असुरक्षा जैसी भयावह विसंगतियों से जन–जीवन जर्जर होने लगा। मानवीय मूल्यों का अधःपतन होने लगा।

इन सभी सामाजिक–राजनीतिक विसंगतियों पर समकालीन कवियों ने अपने काव्य की पैनी धार से तीव्र प्रहार किये हैं।उनका काव्य कल्पना प्रसूत न होकर भोगे हुए यथार्थ का व्यापक चित्रण है। समकालीन काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर सर्वश्री अज्ञेय जी,मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, बाबा नागार्जुन, रघुवीर सहाय, धूमिल, दुष्यंत कुमार,गिरिजा कुमार माथुर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धर्मवीर भारती, केदारनाथ अग्रवाल, कुंवर नारायण, नरेश मेहता, श्रीकांत वर्मा, शमशेर बहादुर सिंह जी आदि ऐसे समर्थ युग–समाज सचेतक कवि हैं जिनकी कविताओं मे स्वतंत्रता पश्चात् छटपटाते साधारण जन की व्यथा–कथा है। समकालीन काव्यधारा के सभी कवि वास्तव में जन कवि हैं। समकालीन कवियों का उपरोक्त सामाजिक –राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव हेत समग्रतः आह्वान मुक्तिबोध के शब्दों में– **"अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे/तोड़ने होंगे ही गढ़ और मठ सब/पहुॅचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार/तब कहीं देखने मिलेंगी हमको ...अरुण कमल एक।"**36

संदर्भ सूचीः

1.इन्द्रधनु रौंदे हुए येः अज्ञेयः अज्ञेय का काव्यःजीवन सत्य और दर्शनः डॉ. मीता शर्मा पंचशील प्रकाशन जयपुर पृ. 63
2. समकालीन हिंदी कविताः संपां. परमानंद श्रीवास्तवः साहित्य अकादमी प्रकाशनः पृ.25
3. अज्ञेय : संकलित कविताएॅः चयनः नामवर सिंह, नेशलन बुक ट्रस्ट पृ 90
4. अंधेरे मेंः मुक्तिबोध रचनावलीः भाग दो :पृ. 319
5. अंधेरे मेंः मुक्तिबोध रचनावलीः भाग दो :पृ. 319
6 अंधेरे मेंः मुक्तिबोध रचनावलीः भाग दो :पृ. 326
7. अंधेरे मेंः मुक्तिबोध रचनावलीः भाग दो :पृ. 329–330
8. अंधेरे मेंः मुक्तिबोध रचनावलीः भाग दो :पृ. 332
9. जाहिल के बानेः भवानी प्रसाद मिश्र : कविता कोश. आर्ग .
10. गीत फरोश :भवानी प्रसाद मिश्र, दूसरा सप्तकः अज्ञेय पृ. 36
11. नागार्जुन और हमारा लोकतेत्रः मनोज कुमार सिंहः अपनी माटी, त्रैयमासिक पत्रिका अक्टूबर 2020
12. समकाली काव्य संकलनः संपा. प्रभाकर श्रोत्रियः म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी पृ.49
13. वही पृ. 49
14. वही पृ. 70
15. वही पृ.71
16. वही पृ. 70
17. साये में धूप : दुष्यंत कुमार , पृ.13
18. साये में धूप : दुष्यंत कुमार , पृ.23

19. बीस साल बाद संसद से सड़क तक : धूमिल, राजकमल प्रकाशन पृ.11–12
20. रोटी और संसदः कल सुनना मुझेः धूमिलः राजकमल प्रकाशन
21 अकाल दर्शलः संसद से सड़क तक : धूमिल, राजकमल प्रकाशन पृ.19
22. शहर में सूर्यास्तः संसद से सड़क तक : धूमिल, राजकमल प्रकाशन पृ.47
23. दो पाटों की दुनियाःगिरिजा कुमार माथुर, तार सप्तकः अज्ञेय पृ. 172
24. साठोत्तरी हिंदी कविता में राष्ट्रीय–सामाजिक चेतनाः डॉ. नरेश कुमार वर्मा पृ.116
25. गर्म हवाएँः सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ,पृ. 79
26. सौंदर्यबोधःसर्वेश्वर दयाल सक्सेना, तार सप्तकः अज्ञेय पृ. 229
27. वहीः पृ.230
28 टूटा पहियाः धर्मवीर भारती ,समकालीन हिंदी कविताः संपां. परमानंद श्रीवास्तवः साहित्य अकादमी प्रकाशनःपृ..89
29.'एक उठा हुआ हाथ' भारत भूषण अग्रवाल, अज्ञेय का काव्यःजीवन सत्य और दर्शनः डॉ. मीता शर्मा पंचशील प्रकाशन जयपुर पृ. 22
30. 'हड्डियों का तापः' डॉ.रामविलास शर्माः तार सप्तकःपृ. 206
31. कवि गाता हैः नेमिचन्द जैनः तार सप्तक ःअज्ञेय पृ.56
32. छायावादोत्तर हिन्दी कविताःडॉ. रमाकांत शर्मा पृ. 376
33. साठोत्तरी हिंदी कविता में राष्ट्रीय–सामाजिक चेतनाः डॉ. नरेश कुमार वर्मा पृ.73
34 वही पृ.74
35. वही पृ.123
36. अंधेरें मेंः मुक्तिबोध रचनावलीः भाग–दो पृ. 348